18

fo".k|lglukeLrks=&VII

प्रिय शिक्षार्थी, यह पाठ पूर्व पाठ के क्रम में ही है जिसमें आपने विष्णुस्रनामस्तोत्र के श्लोकों तथा उनके अर्थ के विषय में जाना है। इस पाठ में आप आगे के श्लोकों को पढेंगें।

mÌ’;

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण कर पाने में; और
- पढ़े गये श्लोकों का अर्थ समझ पानें में ।

18.1 fo".k| lg lukeLrk= & VII

mÙkjU;kl% A

Hkh"e mokp ---

brhn dhrZuh;L; d"koL; egkReu% A

ukEuk lgl= fn0;kuke'k"k.k çdhfrre AA f AA

भीष्म बोले

इस प्रकार विष्णु जी के सहस्र नाम होते हैं

; bn 'k.k;kfUuR;a ;'pkfi ifjdhr;sr A

uk'kHk çklu;kfRdf¥pRlk·e=g p ekuo% AA „ AA

जो सदा नियमित होकर इसका पाठ सुनता है या जपता है उसे जीवन में और मृत्यु के बाद भी कभी अशुभता नहीं देखनी पड़ती

onkUrxk czã.k% L;kR{kf=;k fot;h Hkosr A

o'";k /kuLe)% L;kPNæ% l[keokIu;kr AA … AA

सहस्रनाम का श्रवण करने से

ब्राह्मण विद्या पाता है,

क्षत्रिय विजय पाता है, वैश्य धन पाता है और

शूद्र सुख पाता है।

fVIi.kh

/kekFkh çkIuq;k) eeFkkFkh pkFkekIuq;kr A
dkekuokIuq;kRdkeh çtkFkh çkIuq;kRçtke AA † AA

सहस्रनाम का पाठ करने से
जिसे धर्म चाहिए उसे धर्म मिलता है,
जिसे धन चाहिए उसे धन मिलता है,
जिसे सुख चाहिए उसे सुख मिलता है,
जिसे संतान चाहिए उसे संतान मिलता है।

Hkfäeku ;% lnkRFkk; 'kfpLrnxreku l% A
lgl oklnoL; ukEukerRçdhrZ;r AA ‡ AA

जो वासुदेव अर्थात विष्णु के 1000 नामों का भजन रोज सुबह करता है। और जिसका मन सहस्रनाम करते हुए लगातार भगवान् विष्णु में लगा रहता है।

;'k% çkIukfr foiqy Kkfrçk/kkU;eso p A
vpyk fJ;eklukfr J;% çkIukR;uÙkee AA ^ AA

उसे प्रसिद्धि मिलती है, वह हर जगह सबसे आगे रहता है, वह धनवान बनता है। उसे मोक्ष मिलता है, उसे किसी का डर नहीं रहेगा, उसकी कीर्ति पताका फहराने लगेगी

d{kk & 5

fVIi.kh

u Hk;a DofpnkIukfr oh;Z rst'p foUnfr A
HkoR;jksxks |frekUcy:ix|.kkfUor% AA %‰ AA

वह बीमार नहीं पड़ेगा, वह हमेशा ही स्वस्थ और सुन्दर दिखेगा, उसके पास सब भौतिक सुविधाएं रहेंगी, जो बीमार है वह स्वस्थ हो जायेगा

jksxkrksZ eqP;rs jksxkn)ks eqP;sr cU/kukr~ A
Hk;kUeqP;sr HkhrLrq eqP;srkiUu vkin% AA Š AA

जो बंधन में है वो स्वतंत्र हो जायेगा, जो भय में है उसका भय दूर होगा। और जो खतरे में है वो सुरक्षित हो जायेगा।

nqxkZ.;frrjR;k'kq iq#"ke~ iq#"kksÙkee~ A
LrqoUukelgL=s.k fuR;a HkfäleUfor% AA ‹ AA

जो पुरुषोत्तम में पूरी श्रद्धा रखकर सहस्रनाम का पाठ करता है, वह अत्यंत दुष्कर दुखों को भी पार कर जाएगा।

oklqnsokJ;ks eR;ksZ oklqnsoijk;.k% A
loZikifo'kq)kRek ;kfr czã lukrue~ AA få AA

जो व्यक्ति वासुदेव जी की शरण में आता है और उनके निकट रहता है,। उसके सभी पाप धुल जाते हैं, वह अत्यंत शुद्ध हो जाता हैं। और परमब्रह्म तक पहुंच जाता है।

u okl|noHkäkuke'kHk fo|r Dofpr A
tUeeR;|tjk0;kf/kHk;| uk okiitk;r AA ff AA

वासुदेव के भक्तों पर कभी भी मुश्किल दिन नहीं आते
और वे कभी भी जीवन,मृत्यु, वृद्धावस्था और भय के दुखों को नहीं झेलते।

be| Lroe/kh;ku% J)kHkfä lefUor% A
;|T;rkRelq[k{kkfUrJh/kfrLefrdhfrfHk% AA f„ AA

जो इन नामों को पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ जाता है
वह परम सुख पाता है, धैर्य, स्मृति और कीर्ति पाता है।

u Øk/kk u p ekRl;| u ykHkk uk'kHkk efr% A
HkofUr —r i|.;kuk Hkäkuk i#"kkÙke AA f… AA

पुरुषोत्तम भगवान् के भक्तों को क्रोध, लोभ और अशुभ बुद्धि नहीं होती।

|k% lpUækdu{k=k [k fn'kk Hkegk nf/k% A
okl|noL; oh;|.k fo/krkfu egkReu% AA f† AA

चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्रों के सहित आकाश, दिशाएँ तथा समुद्र ये सब वासुदेव जी के वीर्य से ही धारण किये गए हैं।

d{kk & 5

fVIi.kh

l ljklljxU/koZ l ;{kkjxjk{kl e A
tx}'k orZrn –".kL; lpjkpje AA f‡ AA

देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष, सर्प और राक्षसों के सहित यह सम्पूर्ण जगत श्रीकृष्ण के ही वशवर्ती हैं।

bfUæ;kf.k euk cf)% lÙo rstk cy /kfr% A
okl nokRedkU;kg% {k= {k=K ,o p AA f^ AA

इन्द्रियां, मन, बुद्धि, अंतःकरण, तेज, बल, क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ इन सबको वासुदेवरूप ही कहा है।

l okxekukekpkj% çFke ifjdYi;r A
vkpkjçHkok /kek /keL; çHkjP;r% AA f‰ AA

सब शास्त्रों में सबसे पहले आचार ही की कल्पना होती है, आचार से ही धर्म होता है, और धर्म के प्रभु श्रीअच्युत ही हैं।

_"k;% firjk nok egkHkrkfu /kkro% A
t³xek t³xe pn txUukjk;.kknHkoe AA fŠ AA

ऋषि, पितर, देवता, महाभूत, धातुएँ और ये चराचर जगत नारायण से ही उत्पन्न हुए हैं।

;kxk Kku rFkk lk³[;k fo|k% f'kYikfn de p A
onk% 'kkL=kf.k foKkuersRlo tuknukr AA f‹ AA

योग, ज्ञान तथा सांख्यादि विद्याएँ, शिल्पादि कर्म एवं वेद, शास्त्र और विज्ञान ये सब श्रृजनार्दन से ही हुए हैं।

,dk fo".kqegnHkra iFkXHkrkU;ud'k% A
=hYyksdkU0;kI; HkrkRek Hkq³äs fo'oHkqx0;;% AA „å AA

एकमात्र विष्णुभगवान ही महत्स्वरूप हैं, वह सर्वभूतात्मा विश्वभोक्ता अविनाशी प्रभु ही तीनों लोकों को व्याप्तकर नाना भूतों को तरह तरह से भोगते हैं।

bea Lro Hkxorks fo".kkO;klu dhfrre A
iBs| bPNRi#"k% J;% çkIra lq[kkfu p AA „f AA

जिस पुरुष को कल्याण और सुख पाने की इच्छा हो वह श्रीव्यास जी के कहे हुए भगवान् विष्णु के इस स्तोत्र का पाठ करे।

fo'oo'ojet nso txr% çHkke0;;e A
Hktfur ;s iq"djk{k u r ;kfUr ijkHkoe AA „„ AA

जो मनुष्य विश्वेश्वर, अजन्मा और संसार की उत्पत्ति तथा लय के स्थान देवदेव पुण्डरीकाक्ष को भजते हैं उनका कभी पराभव नहीं होता।

d{kk & 5

fVIi.kh

u r ;kfUr ijkHkoe Å ue bfr A

vtZu mokp ---

ineI=fo'kkyk{k ineukHk lqjksÙke A

Hkäkukeuqjäkuk =krk Hko tukníu AA „… AA

अर्जुन ने कहा

हे कमल की पंखुड़ियों के समान नेत्रों वाले भगवान्
हे भगवान् जिनके उदर पर कमल पुष्प है
हे भगवान् जिनके नेत्र सर्वत्र देखने वाले हैं
हे भगवान् जो सभी देवों के देव हैं
कृपया उन सभी भक्तों को जो आपकी शरण में बड़े प्रेम से आते हैं उनपर आप दया दृष्टि रखें।

JhHkxokuqokp ---

;k ek uke lgl.k Lrksrqfe PNfr ik.Mo A

lks g·edu 'yksdu Lrqr ,o u l'k;% AA „† AA

भगवान् ने कहा

हे अर्जुन ! जो इस सहस्रनाम द्वारा मेरे गीत गाता है उसे यह पता होना चाहिए की मैं तो केवल इसके एक श्लोक से ही प्रसन्न हो जाता हूँ।

Lrqr ,o u lq'k; Åq ue bfr A

0;kl mokp ---

oklukn~oklqnoL; okflra Hkqou=;e A

lozHkwrfuoklks·fl oklqno uekS·Lrq rs AA „‡ AA

व्यास जी ने कहा

उन वासुदेव जी को जो सभी लोकों में रहते हैं, इन लोकों को जीवों के रहने योग्य बनाते हैं और वो जो सब जीवों में जीवात्मा बनकर रहते हैं उन्हें मेरा बारम्बार प्रणाम है।

Jh oklqno ueks·Lrqr Åq ue bfr A

ikoZR;qokp ---

dsuksik;su y?kquk fo".kksukZelglzde A

iBîrs if.MrSfuZR;a JksrqfePNkE;ga çHkks AA „^ AA

पार्वती ने कहा

हे प्रभु ! मैं यह जानने के लिए तत्पर हूँ की इस संसार के बुद्धिमान मनुष्य सहस्रनामों को नित्य ही किस विधि से करेंगे जो आसान हो।

bZ'oj mokp ---

Jhjke jke jkesfr jes jkes eukjes A

lglukke rÙkqY;a jke uke ojkuus AA „‰ AA

भगवान् ने कहा

भगवान् राम का नाम ही इन सहस्र नामों के बराबर है

Jhjkeuke ojkuu Å¡ ue bfr A

czãkokp ---

ueks·LRouUrk; lglewrZ;s lgliknkf{kf'kjks#ckgos A

lgluke«s iq#"kk; 'kk'ors lgldksfV;qxèkkfj.ks ue% AA „Š AA

ब्रह्माजी ने कहा

उन प्रभु को प्रणाम है जिनका कोई अंत नहीं है
जिनके सहस्र नाम हैं
जिनके सहस्र रूप हैं
जिनके सहस्र पैर हैं
जिनके सहस्र नेत्र हैं
जिनके सहस्र सिर हैं
जिनकी सहस्र भुजाएं हैं
और जो सदा हैं

d{kk & 5

fVIi.kh

lglzdkfV;qx/kkfj.k Å| ue bfr A

Å| rRlfnfr JhegkHkkjr 'krlkgL;ka lafgrk;ka o|;kflD;keku|'kklfud

iof.k Hkh"e;f/kf"Bj lokn Jhfo".kkfn0; lglukeLrk=e AA

l¥t; mokp ---

;= ;kx'oj% —".kk ;= ikFkk /kuq/kj% A

r= Jhfot;k Hkfr/kz#ok uhfrefre AA „‹ AA

संजय ने कहा

जहाँ योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर अर्जुन हैं वहां सब शुभ हैं, वहां विजय है, वहां कीर्ति है और न्याय है।

JhHkxokuokp ---

vuU;kf'pUr;Urk ek ;s tuk% i;qikLr A

r"kk fuR;kfHk;qäkuk ;kx{ke ogkE;ge AA …å AA

Sri Krsna said — With reference to those who find it impossible to live without thinking of me, I take the responsibility of bringing about their union with Me and of maintaining that union forever.

ifj=k.kk; lk/kwuka fouk'kk; p nq"—rke~ A
/keZ laLFkkiukFkkZ; lEHkokfe ;qxs ;qxs AA …f AA

For the protection of the righteous and for the destruction of evil-doers, for the establishment of dharma I am born again and again in every age

vkrkZ% fo"k..kk% f'kfFkyk'p Hkhrk% ?kksjs"kq p 0;kf/k"kq orZekuk% A
l³dhR; ukjk;.k'kCnek=a foeqäng[kk% lq[kuks HkofUr AA …„ AA

All those who are in adversity, sorrowful, who are at a loose end, frightened, terrified, or in the grip of disease, by simply chanting the name of Narayana they will be released from their suffering and will attain supreme beatitude.

dk;su okpk eulsfUæ;SokZ cq)îkReuk ok ç—rs% LoHkkokr~ A
djksfe ;|r~ ldya ijLeS ukjk;.kk;sfr leiZ;kfe AA …… AA

Whatever action I may do through my hands, speech, mind, senses, intelligence or Self, by my nature or natural disposition, all of these I offer unto the Supreme Lord Narayana.

bfr Jhfo".kksfnZ0;lglukeLrks=a lEiw.kZe~ A
Åa rrr~ lr~ A

भगवान् ने कहा

जो बिना कुछ और सोचे सिर्फ मेरे बारे है और मेरी सेवा करता है मैं उसकी सब चिंताएं मिटा देता हूँ।

धर्म की रक्षा और अधर्म के नाश के लिए मैं जन्म लेता रहूँगा।

अगर कोई उदास है, चिंतित है, दुखी है, भयभीत है, अत्यधिक बीमार है वह अगर नारायण नारायण का गीत गा ले तो मैं उसकी सारी समस्याओं का निराकरण कर दूंगा।

ikBxr iz'u& 18-1

1. कः अशुभं न प्राप्नुयात् ?
2. विष्णु.सहस्रनाम.स्तोत्रम् श्रुत्वा ब्राह्मणः किं भवेत् ?
3. प्रजार्थी किं प्राप्नुयात् ?
4. कः अचलां श्रियं आप्नोति ?
5. पुण्यभक्तानां किं न भवन्ति ?

vkius D;k lh[kk\

- श्लोकों का शुद्ध उच्चारण तथा अर्थ।
- भगवान विष्णु के सहस्र नामों के उच्चारण का फल

ikBkr iz'u

1. विष्णुसहस्रनामस्तोम का क्या महत्त्व है?
2. भगवान विष्णु के सहस्र नामों के उच्चारण के क्या फल बताये गये है?

mÙkjekyk

1. यः इदं विष्णु.सहस्रनाम.स्तोत्रम् नित्यं शृणुयात् ।
2. ब्राह्मणः वेदान्तगो भवेत् ।
3. प्रजाम्
4. यः भक्तिमान् सदा उत्थाय वासुदेवस्य नामं प्रकिर्तयेत ।
5. न क्रोधःए न मात्सर्यं न लोभः न च अशुभा गतिः भवति ।